

राम स्तुति

{॥ राम स्तुति ॥}

गोस्वामी तुलसीदास विरचित श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड

राम जन्म

भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ॥

हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बियारी ॥

लोचन अभिरामा तनु धनस्यामा निज आयुध भुज्य चारी ॥

भूषण वनमाला नयन बिसाला सोभासिन्धु भरारी ॥

कह दुई कर जेरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ॥

माया गुअन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥

करना सुभ सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ॥

सो मम हित लागी जन अनुरागी भय—उ प्रकट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति भेद कहै ॥

मम उर सो आसी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकांना चरित बहुत बिधि क्रीन्ह यहै ॥

कहि कथा सुहाई मातु बुआई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ॥

ક્રીજે સિસુલીલા અતિ પ્રિયસીલા યહ સુખ પરમ અનૂપા ॥

સુનિ બચન સુખાના રોદન ઠાના હોઈ બાલક સુરભૂપા ॥

યહ ચરિત જે ગાવહિ હરિપદ પાવહિ તે ન પરહિં ભવકૂપા ॥

બિપ્ર ધેનુ સુર સંત હિત લીન્હ મનુજ અવતાર ॥

નિજ ઈચ્છા નિર્મિત તનુ માયા ગુન ગો પાર ॥

અરણ્યકાણ્ડ

અત્રિ મુનિ દ્વારા સ્તુતિ

નમામિ ભક્ત વત્સલમ્ ॥ કૃપાલુ શીલ કોમલમ્ ॥

ભજામિ તે પદ્મબુજમ્ ॥ અકામિનામ્ સ્વધામદમ્ ॥

નિકામ્ શ્યામ્ સુંદરમ્ ॥ ભવામ્બુનાથ મંદરમ્ ॥

પ્રકુલ્લ કંજ લોચનમ્ ॥ મદ્દાદિ દોષ મોચનમ્ ॥

પ્રલંબ બાહુ વિક્રમમ્ ॥ પ્રભોડપ્રમેય વૈભવમ્ ॥

નિષંગ ચાપ સાયકમ્ ॥ ધરમ્ ત્રિલોક નાયકમ્ ॥

દિનેશ વંશ મંદનમ્ ॥ મહેશ ચાપ ખંદનમ્ ॥

મુનીંદ્ર સંત રંજનમ્ ॥ સુરારિ વૃન્દ ભંજનમ્ ॥

मनोज वैरि वंदितम् ॥ अजादि देव सेवितम् ॥

विशुद्ध बोध विग्रहम् ॥ समस्त दूषणापहम् ॥

नमामि छंदिरा पतिम् ॥ सुभाकरम् सताम् गतिम् ॥

भव्ये सशक्ति सानुजम् ॥ शची पति प्रियानुजम् ॥

त्वदंघ्रि मूल ये नराह ॥ भवंति हीन मत्सराह ॥

पतंति नो भवार्णवे ॥ वितर्क वीथि संकुले ॥

विविक्त वासिनह सद्य ॥ भवंति मुक्तये मुद्य ॥

निरस्य छंद्रियादिकम् ॥ प्रयांति ते गतिम् स्वकम् ॥

तमेकमद्भुतम् प्रभुम् ॥ निरीहमीश्वरम् विभुम् ॥

जगद्गुरुम् च शाश्वतम् ॥ तुरीयमेव केवलम् ॥

भजामि भाव वल्लभम् ॥ कुयोगिनाम् सुदुर्लभम् ॥

स्वभक्त इत्य पादपम् ॥ समम् सुसेव्यमन्वहम् ॥

अनूप इप भूपतिम् ॥ नतोऽहमुर्विजा पतिम् ॥

प्रसीद मे नमामि ते ॥ पद्मव्य भक्ति देहि मे ॥

पठंति ये स्तवम् षष्ठम् ॥ नरादरेण ते पदम् ॥

प्रवृत्ति नात्र संशयम् ॥ त्वदीय भक्ति संयुताह ॥

अरण्यकाण्ड

मुनि सुतीक्ष्ण द्वारा स्तुति

कह मुनि प्रभु सुन भिनती मोरी ॥ अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ॥

महिमा अमित मोरि मति थोरी ॥ रबि सन्मुख भद्योत अँजोरी ॥

श्याम तामरस दाम शरीरम् ॥ जटा मुकुट परिधन मुनिथीरम् ॥

पाणि चाप शर कति तुण्डीरम् ॥ नौमि निरंतर श्री रघुवीरम् ॥

मोह विपिन घन दहन कृशानुह ॥ संत सरोरुह कानन भानुह ॥

निशियर करि अरुथ मृगराजह ॥ त्रातु सदा नो भव भग आजह ॥

अरुण नयन रञ्जव सुवेशम् ॥ सिता नयन चकोर निशेशम् ॥

हर हृदि मानस बाल मरालम् ॥ नौमि राम उर आहु विशालम् ॥

संसय सर्प ग्रसन उरगाह ॥ शमन सुकर्कश तर्क विषह ॥

भव भंजन रंजन सुर यूथह ॥ त्रातु नाथ नो झरुर्धपा वरुथह ॥

निर्गुण सगुण विषम सम रूपम् ॥ ज्ञान गिरा गोतीतमनूपम् ॥

अमलम अभिलम अनवधम अपारम् ॥ नौमि राम भंजन महि भारम् ॥

भक्त कल्प पादप आरामह ॥ तर्जन क्रोध लोभ मद कामह ॥

अति नागर भव सागर सेतुह ॥ त्रातु सद्य दिनकर कुल केतुह ॥

अतुलित भुज प्रताप बल धामह ॥ कलि मल विपुल विभंजन नामह ॥

धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामह ॥ संतत शम तनोतु मम रामह ॥

वदपि विरव व्यापक अभिनासी ॥ सज के हृदयं निरंतर आसी ॥

तदपि अनुव श्री सहित भरारी ॥ असतु मनसि सम ज्ञाननयारी ॥

वे जानहिं ते जानहुं स्वामी ॥ सगुन अगुन उर अंतराामी ॥

जे कोसलपति राजिव नयना ॥ करौ सो राम हृदय मम अयना ॥

अस अभिमान जाँह जनि मोरे ॥ मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥

उत्तरकाण्ड

श्रीराम के राज्याभिषेक के पश्चात् स्तुति

जय राम रमारमनम शमनम् ॥ भव ताप भयाकुल पाहि जनम् ॥

अवधेश सुरेश रमेश विभो ॥ शरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥

दसशीश विज्ञान बीस भुजा ॥ कृत दूरि मलाअ महि भूरि रजा ॥

रवनीचर अंद पतंगा रहे ॥ सर पावक तेव प्रचंड दहे ॥

महि मंदल मंदन चारतरम् ॥ धृत सायक चाप निषंग अरम् ॥

मद मोह मला ममता रवनी ॥ तम पुंज दिवाकर तेव अनी ॥

मनजात किरात निपात किये ॥ मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे ॥ विषया अन पाँवर भूति परे ॥

अहु रोग अयोगिन्हि लोग हये ॥ अवदंघ्रि निरादर के फल अ ॥

भव सिंधु अगाध परे नर ते ॥ पद पंकज प्रेम न जे करते ॥

अति दीन मलीन दुभी नितहीं ॥ जिन्ह कें पद पंकज प्रीत नहीं ॥

अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें ॥ प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा ॥ तिन्ह कें सम भैभव वा अपदा ॥

अहि ते तव सेवक छेत मुदा ॥ मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिये ॥ पद पंक्त्य सेवत शुद्ध हिये ॥

सम मानि निरादर आदरही ॥ सब संत सुभी बियरंति मही ॥

मुनि मानस पंक्त्य भृंग भवे ॥ रघुवीर मछ रनधीर अवे ॥

तव नाम जपामि नमामि हरी ॥ भव रोग महागद मान अरी ॥

गुन सील कृपा परमायतनम् ॥ प्रनमामि निरंतर श्रीरमनम् ॥

रघुनंद निरंजय दंड धनम् ॥ महिपाल बिलोक्य दीन जनम् ॥

बार बार बार माग—उ हरषि देहु श्रीरंग ॥

पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Rama Stuti (From Ramcharitmanas) Lyrics in Gujarati PDF

% File name : stuti.itx

% Location : doc_z_otherlang_hindi

% Author : Goswami Tulasidas

% Language : Hindi

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : Mr. Balram J. Rathore, Ratlam, M.P., a retired railway driver

% Acknowledge-Permission: Dr. Vineet Chaitanya, vc@iiit.net
% Latest update : March 12, 2015
% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
% Site access : <http://sanskritdocuments.org>
%
% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study
% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of
% any website or individuals or for commercial purpose without permission.
% Please help to maintain respect for volunteer spirit.
%

We acknowledge well-meaning volunteers for Sanskritdocuments.org and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.
Please check their sites later for improved versions of the texts.
This file should strictly be kept for personal use.
PDF file is generated [December 9, 2015] at Stotram Website